असतो मा सद्गमय

आज के इस समावर्त्तन संस्कार में जिन छात्रों ने उपाधि प्राप्त की है उनको मैं हृदय से बधाई और शुभकामनाएँ देता हूँ। विश्वविद्यालय के लिए यह एक ऐतिहासिक दिवस है। आज आपने इस उपाधि के साथ जीविकोपार्जन की अपनी शिक्षा का प्रथम सोपान पूर्ण किया है। आज नए कर्त्तव्यों और नए उत्तरदायित्वों के प्रति संकल्पबद्ध होने का दिन है। आज से जीवन की चुनौतियों और संघर्षो से सीखने का नया अध्याय आरम्भ हुआ है। तैत्तिरीय उपनिषद में आज के दिन आचार्य अपने शिष्य को जीवन की सार्थकता के सूत्र बताते हुए कहता है 'सत्यंवद:। धर्मम्चर। स्वाध्यायन्मा प्रमद:। अर्थात अपनी **वाणी** से सत्य का उच्चारण करो। धर्म पथ का आचरण करो और स्वाध्याय में कभी आलस्य मत करो। ये आप्त वाक्य हजारों वर्षो से हमारी शिक्षा, संस्कृति, परम्परा, पुरुषार्थ और राष्ट्रीय अस्मिता के प्रेरक प्रतीक रहे हैं। पश्चिमी शिक्षा और जीवनशैली तथा आधुनिक विज्ञान के प्रभाव से भले ही इसका अनुपालन न हो रहा हो, लेकिन संस्कार, नैतिकता और गुणवत्ता जैसे मूल्यों के संरक्षक भारतीय समाज में आज भी ये आदर्श प्रासंगिक हैं और भावी पीढ़ियों को भी **अनुप्राणित** करते रहेंगे।

पंडित माखनलाल चतुर्वेदी जैसे महान संपादक, साहित्यकार और स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के जीवन आदर्शो से प्रेरित यह विश्वविद्यालय मीडिया की ऐसी प्रथम राष्ट्रीय विद्यापीठ है जो सभी प्रचलित विधाओं की स्नातकोत्तर शिक्षा और शोध का केन्द्र बन गया है। भारतीय तत्व चिन्तन के मनीषियों ने सम्प्रेषण को विराट पुरुष की महाशक्ति के रूप में देखा और अनुभव किया है। विखंडन और पुनर्निर्माण जैसे ब्रह्मांड की अनवरत प्रक्रिया है उसी तरह सम्प्रेषण शब्दों, ध्वनियों, संकेतों और दृश्यों के माध्यम से सूचना और ज्ञान के रूपान्तरण की एक सनातन विधा है। इसकी अवधारणा में सम्प्रेषक और ग्रहणकर्त्ता का मन और बुद्धि, प्रेरणा और अनुभूति, संवेदना और आक्रोश भी सृजित और प्रवाहित होता है। भारतीय संदर्भ में सम्प्रेषण को ज्ञान के वाहक और सकारात्मक उत्प्रेरक के रूप में स्वीकार किया गया है। उपनिषद कालीन समाज में भी ऋषियों, संतों और व्यापारियों का यायावर समाज सूचनाओं के संचार का काम करता था। सम्प्रेषण के जनसंचार में परिवर्तित होने की यात्रा के पीछे विज्ञान और उपग्रह संचार की टैक्नोलॉजी की अविस्मरणीय भूमिका है। यूरोप की औद्योगिक क्रांति नविज्ञान और प्रौद्योगिकी के विकास में एक वैश्विक परिवेश पैदा किया था। इसी प्रौद्योगिकी ने भौगोलिक दूरियां मिटाकर सूचना और संचार के विस्तार के नए क्षितिज खोल दिए हैं। इंटरनेट और डिजिटल क्रांति ने मीडिया की जिस नई संस्कृति का विस्तार किया है उसने आधुनिक पीढ़ी के सामने स्वावलम्बन, स्पर्धा और समृद्धि के अनगिनत विकल्प प्रस्तुत किए हैं।

विस्तार और समृद्धि की अनन्त शक्तियों के सहारे मीडिया जीवन के महत्वपूर्ण क्षेत्रों में प्राथमिकताओं का निर्धारण कर रही है और पूरी दुनिया को अपने आर्थिक शिकंजे में जकड़ने के लिए बेचैन बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ उसको नियंत्रित करने में लगी हैं। जान स्टुअर्ट मिल ने 19 वीं सदी में 'सत्ता बनाम स्वतंत्रता' (Authority vrs Liberty) का सिद्धान्त दिया था। पूरी दुनियाँ और विशष रूप में भारतीय मीडिया का इतिहास गवाह है कि उसने अभिव्यक्ति की आजादी और पीड़ित की पक्षधरता का पवित्र वायदा किया था। उस संकल्प की ज्योति मन्द पड़ती जा रही है। पक्षधरता की प्राथमिकताएँ परिवर्तित होने लगी है। यह प्रवृत्ति चिन्ताजनक है। हमें यह सदैव स्मरण रखना चाहिए कि लोकमंगल ही मीडिया की अंतिम कसौटी है। इस युवा विश्वविद्यालय से निकले हर पत्रकार और मीडियाकर्मी की वास्तविक पहचान इसी कसौटी के माध्यम से होनी है। क्या इस विश्वविद्यालय की शिक्षा ने आपके आत्मविश्वास, कार्यदक्षता और आत्म निर्भरता में वृद्धि की है ? क्या यहाँ आपकी आन्तरिक शक्तियों और मानसिक क्षितिज का विस्तार हुआ है ? भारत और भारतीय समाज के प्रति आपका स्वाभिमान और बढ़ा है ? यदि हाँ तो आप पंडित माखनलाल चतुर्वेदी की संपादकीय परम्परा की महान विरासत के भावी उत्तराधिकारी हैं। आप जैसे कृत संकल्प युवाओं की पीढ़ी ही भारत की सांस्कृतिक परम्परा और भविष्य निर्माण का उत्तरदायित्व वहन करने की हकदार है। भारतीय युवाओं ने अपनी प्रतिभा और परिश्रम से पूरे विश्व को प्रभावित किया है। आप उस मार्ग को अधिक उज्जवल और निष्कंटक बनाएंगे। इस वैदिक प्रार्थना को बार-बार दोहराते हुए मैं अपनी बात पूरी करना चाहता हूँ।

असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्मा अमृतगमय।

यह मंत्र हमारी संवेदना को निरन्तर उत्प्रेरित करता रहे। राष्ट्रीय चेतना को संवर्धित करता रहे। इसी कामना के साथ मैं इस विश्वविद्यालय के संस्थापकों, सभी कुलाध्यक्षों, महापरिषद के सभी माननीय अध्यक्षों, सभी पूर्व महानिदेशकों को अपना प्रणाम निवेदित करता हूँ।

– अच्युतानंद मिश्र